एक कहानी यह भी (मन्नू भंडारी)

पाठ का परिचय

मन्नू भंडारी आधुनिक कथा-साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर हैं। उन्होंने कहानी पर ही मुख्य रूप से लेखनी चलाई है। जब उन्होंने अपने विषय में कुछ लिखने का प्रयास किया तो उनका वह आत्मकथ्य भी कहानी के समान ही सरस और रोचक बन गया। यह उनके कथा-कौशल का परिणाम है। प्रस्तुत पाठ 'एक कहानी यह भी' की विषयवस्तु भी यही है। प्रस्तुत आत्मकथ्य उनकी आत्मकथा नहीं है; क्योंकि आत्मकथा में लेखक अपने जीवन का आद्योपांत सिलसिलेवार वर्णन करता है। यहाँ मन्नू भंडारी ने अपने जीवन से संबंधित केवल उन व्यक्तियों और घटनाओं का ही उल्लेख किया है, जो उनके लेखकीय जीवन से जुड़े हैं। संकलित अंश उनके किशोर जीवन से जुड़ी घटनाओं से संबंधित है, जिसमें उनके पिता और उनके कॉलिज प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का व्यक्तित्व विशेष रूप से उभरकर आया है। लेखिका के व्यक्तित्व-निर्माण में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका इन्हीं दो लोगों की रही है। उन्होंने यहाँ इस बात का उद्‌घाटन किया कि किस प्रकार से एक साधारण-सी दिखने वाली लड़की असाधारण (विशेष) बन गई। सन् 1946-47 की स्वतंत्रता-आंदोलन की आँधी ने मन्नू भंडारी को अपने बवंडर में ऐसा फँसाया कि एक छोटे शहर की युवा होती साधारण लड़की न जाने कितने लोगों की प्रेरणास्रोत बन गई। उस लड़की ने जिस उत्साह, ओज, संगठन-क्षमता और विरोध करने के नए मार्ग को चुना, उसे जिसने देखा, वह देखता ही रह गया।

पाठ के प्रमुख पात्र और उनका परिचय

1. **लेखिका मन्नू भंडारी**– जन्म मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव में • काली, दुबली और मरियल • हीनभावना से ग्रस्त • संकोची • साहित्यिक अभिरुचि वाली • नारी स्वतंत्रता की पक्षधर • वर्जनाओं को तोड़ने का साहस • कुशल नेता • प्रखर वक्ता • हुड़दंगी • जीत के लिए प्रतिबद्ध।
2. **पिता भंडारी जी**–दरियादिल • बेहद कोमल और संवेदनशील • बेहदक्रोधी और अहंवादी • महत्त्वाकांक्षी • शक्की • अतीत के पोषक • रसोई को भटियारखाना मानने वाले • लेखिका की शिक्षा के प्रति सजग • नारी स्वातंत्र्य घर की चारदीवारी तक मानने वाले • यशलिप्सा उनकी दुर्बलता • अंतर्विरोधों के बीच जीने वाले • विशिष्ट बनने की ललक • सामाजिक छवि के प्रति सजग।
3. **लेखिका की माँ** – दब्बू व्यक्तित्व और बेपढ़ी-लिखी • धैर्यशालिनी और सहनशील • त्यागी • वात्सल्यमयी • पारंपरिक असहाय पत्नी • स्नेहमयी।
4. **प्राध्यापिका शीला अग्रवाल** – हिंदी की प्राध्यापिका • साहित्य में रुचि जगाने वाली • छात्राओं को भड़काने और अनुशासन बिगाड़ने के लिए प्रेरित करने की आरोपी।
5. **डॉ० अंबा लाल** – • अजमेर के प्रतिष्ठित और सम्मानित व्यक्ति • परम-स्नेही • पिता के घनिष्ठ मित्र • प्रतिभा के पारखी • प्रोत्साहित करने वाले श्रोता ।
6. **सुशीला** – • लेखिका से दो साल बड़ी बहन • गोरी, स्वस्थ और हँसमुख।

पाठ का सारांश

आत्मकथ्य– 'एक कहानी यह भी' मन्नू भंडारी द्वारा रचित आत्मकथ्य है। इस आत्मकथ्य में उन्होंने उन व्यक्तियों एवं घटनाओं के बारे में लिखा है, जो उनके लेखकीय जीवन से जुड़े हुए हैं। वे अपने विषय में लिखती हैं–

कोमल, किंतु अहंवादी पिता का परिचय– जन्मी तो मध्य प्रदेश के भानपुरा (जिला मंदसौर) गाँव में थी, लेकिन मेरी यादों का क्रम प्रारंभ होता है अजमेर के ब्रह्मपुरी मुहल्ले के एक दो-मंज़िला मकान से, जिसकी ऊपरी मंज़िल में मेरे

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पिताजी का साम्राज्य था। पिताजी कमरे में फैली-बिखरी पुस्तकों-पत्रिकाओं और अखबारों के बीच या तो कुछ पढ़ते रहते थे या फिर 'डिक्टेशन' देते रहते थे। लेखिका ने अपनी माँ के लिए बेबाक़ लिखा है–हमारी बेपढ़ी-लिखी व्यक्तित्वविहीन माँ...सवेरे से शाम तक हम सबकी इच्छाओं और पिताजी की आज्ञाओं का पालन करने के लिए सदैव तत्पर रहतीं। अजमेर से पहले पिताजी इंदौर में थे, जहाँ उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था। कांग्रेस के साथ-साथ वे समाज-सुधार के कामों से भी जुड़े हुए थे। शिक्षा के वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे, बल्कि उन दिनों आठ-आठ, दस-दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाते भी थे, जिनमें से कई तो बाद में ऊँचे-ऊँचे पदों पर नियुक्त हुए। ये उनकी खुशहाली के दिन थे और उन दिनों उनकी दरियादिली के चर्चे भी कम नहीं थे। एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी।

पिता की दयनीय आर्थिक दशा– लेखिका आगे अपने आत्मकथ्य में लिखती हैं–पर यह सब तो मैंने केवल सुना। देखा, तब तो इन गुणों के भग्नावशेषों को ढोते पिता थे। एक बहुत बड़े आर्थिक झटके के कारण वे इंदौर से अजमेर आ गए थे, जहाँ उन्होंने अपने अकेले के बलबूते और हौसले से अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश (विषयवार) के अधूरे काम को आगे बढ़ाना शुरू किया, जो अपनी तरह का पहला और अकेला शब्दकोश था। इसने उन्हें यश और प्रतिष्ठा तो बहुत दी, पर अर्थ नहीं और शायद गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्त्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थी। अपनों के हाथों विश्वासघात से छले गए थे पिताजी। इस कारण वे सभी पर अविश्वास करके सभी को शक की निगाह से देखने लगे थे।

पिता और माँ का लेखिका के व्यक्तित्व पर प्रभाव– पिताजी के व्यक्तित्व की खूबियाँ लेखिका के व्यक्तित्व के ताने-बाने में भी बुनी थीं। लेखिका आगे अपनी रूपरचना पर प्रकाश डालती हैं–मैं काली हूँ। बचपन में दुबली और मरियल भी थी। गोरा रंग पिताजी की कमज़ोरी था। बचपन में मुझसे दो साल बड़ी खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख बहन सुशीला से वे हर बात में मेरी तुलना किया करते थे। उसकी प्रशंसा से मेरे भीतर एक हीनभावना की ग्रंथि उपजी, जिससे आज तक मैं नहीं उबर पाई हूँ। पिता जितने शक्की स्वभाव के थे, उनके ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी माँ। धरती से कुछ ज़्यादा ही सहनशक्ति थी उनमें। पिताजी की हर ज़्यादती को सहतीं और बच्चों की हर उचित-अनुचित फ़र्माइश और ज़िद को अपना फ़र्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थीं वे।

लेखिका के परिवार और मुहल्ले का वातावरण– पाँच भाई-बहनों में सबसे छोटी मैं; सबसे बड़ी बहन की शादी के समय सात साल की थी। अपने से दो साल बड़ी बहन सुशीला के साथ मैंने बचपन में खेले जाने वाले सभी खेल खेले थे। उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं, बल्कि पूरा मुहल्ला एक घर होता था। बल्कि मुहल्ले के कुछ घर तो परिवार का एक हिस्सा होते थे। लेखिका लिखती हैं कि आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरंभिक कहानियों के पात्र इसी मुहल्ले के हैं, जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था गुज़ार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था।

राजनीति से लेखिका का परिचय– उस समय तक हमारे परिवार में लड़की के विवाह के लिए अनिवार्य योग्यता थी–उम्र में सोलह वर्ष और शिक्षा में मैट्रिक। सन् 1944 ई० में सुशीला ने यह योग्यता प्राप्त की और शादी करके कलकत्ता चली गई। दोनों बड़े भाई भी आगे पढ़ाई के लिए बाहर चले गए। इन लोगों की छत्रछाया के हटते ही पहली बार मुझे नए सिरे से अपने वजूद का एहसास हुआ। पिताजी का ध्यान भी पहली बार मुझ पर केंद्रित हुआ। लड़कियों को जिस उम्र में स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुघड़ गृहिणी और कुशल पाकशास्त्री बनाने के नुस्खे जुटाए जाते थे, पिताजी का आग्रह रहता था कि मैं रसोई से दूर ही रहूँ। रसोई को वे भटियारखाना कहते थे और उनके हिसाब में वहाँ रहना अपनी क्षमता और प्रतिभा को भट्ठी में झोंकना था। घर में आए-दिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े होते थे, जिसमें कांग्रेस, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी, आर० एस० एस० के लोग आते थे और जमकर बहसें होती थीं। बहस करना पिताजी का प्रिय शगल था। चाय-पानी या नाश्ता देने जाती तो पिताजी मुझे भी वहीं बैठने को कहते। वे चाहते थे कि मैं भी वहीं बैठूँ, सुनूँ और जानूँ कि देश में चारों ओर क्या कुछ हो रहा है। देश में हो भी कितना कुछ रहा था। '1942 के आंदोलन' के बाद से तो सारा देश जैसे खौल रहा था, लेकिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों की नीतियाँ, उनके आपसी विरोध या मतभेदों की तो मुझे दूर-दूर तक कोई समझ नहीं थी। हाँ, क्रांतिकारियों और देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण, उनकी कुर्बानियों से ज़रूर मन आक्रांत रहता था।

साहित्य की दुनिया में प्रवेश– दसवीं कक्षा तक आलम यह था कि बिना किसी खास समझ के घर में होने वाली बहसें सुनती थी और बिना चुनाव किए, बिना लेखक की अहमियत से परिचित हुए किताबें पढ़ती थी। लेकिन सन् 1945 में जैसे ही दसवीं पास करके मैं 'फर्स्ट इयर' में आई, हिंदी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से परिचय हुआ। सावित्री गर्ल्स हाईस्कूल...जहाँ मैंने ककहरा सीखा, एक साल पहले ही कॉलिज बना था और वे इसी साल नियुक्त हुई थीं। उन्होंने मुझे बाकायदा साहित्य की दुनिया में प्रवेश करवाया।

स्वतंत्रता-आंदोलन में भागीदारी– इस समय मैंने प्रेमचंद, जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा को पढ़ा। शीला अग्रवाल ने साहित्य की दुनिया ही नहीं दिखाई, बल्कि घर की चहारदीवारी के बीच बैठकर देश की स्थितियों को जानने-समझने का जो सिलसिला पिताजी ने शुरू किया था, उन्होंने वहाँ से खींचकर उसे भी स्थितियों की सक्रिय भागीदारी में बदल दिया। सन् 1946-47 में मैं भी सड़कों पर आज़ादी माँगने वाले लोगों के साथ निकल पड़ी। इस बात पर पिताजी से विरोध बना रहा, उनके क्रोध का भी शिकार होना पड़ा। जब राजेंद्र से विवाह हुआ, तब तक ऐसा ही सब चलता रहा।

कॉलिज की राजनीति में सक्रियता– यश-कामना, बल्कि कहूँ कि यश-लिप्सा, पिताजी की सबसे बड़ी दुर्बलता थी और उनके जीवन की धुरी था यह सिद्धांत कि व्यक्ति को कुछ विशिष्ट बनकर जीना चाहिए...कुछ ऐसे काम करने चाहिए कि समाज में उसका नाम हो, सम्मान हो, प्रतिष्ठा हो, वर्चस्व हो। इसके चलते ही मैं दो-एक बार उनके कोप से बच गई थी। एक बार कॉलिज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि पिताजी आकर मिलें और बताएँ कि मेरी गतिविधियों के कारण मेरे खिलाफ़ अनुशासनात्मक कार्यवाही क्यों न की जाए।

पत्र पढ़कर पिताजी आग-बबूला हो उठे। जैसे-तैसे प्रिंसिपल से मिलने पहुँचे। पर लौटकर मुझे बहुत शाबाशी दी। वे इस बात से प्रसन्न थे कि कॉलिज की लड़कियाँ मेरे इशारे पर कुछ भी करने को तैयार हैं। इसी प्रकार अजमेर के मुख्य बाज़ार के चौराहे पर मेरे एक भाषण देने की खबर पिताजी को लगी। पिताजी आग-बबूला हो उठे। पर पिताजी के एक अंतरंग मित्र ने उनसे मेरे भाषण की ऐसी तारीफ़ की कि पिताजी का गुस्सा शांत हो सीना गर्व से चौड़ा हो गया।

कॉलिज-प्रवेश पर प्रतिबंध– सन् 1947 के मई महीने में शीला अग्रवाल को कॉलिज वालों ने लड़कियों को भड़काने और कॉलिज का अनुशासन बिगाड़ने के आरोप में नोटिस थमा दिया। इस बात को लेकर हुड़दंग न मचे, इसलिए जुलाई में थर्ड इयर की क्लासेज़ बंद करके हम दो-तीन छात्राओं का प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया।

जीत की खुशी और 15 अगस्त– हुड़दंग तो बाहर रहकर भी इतना मचाया कि कॉलिज वालों को अगस्त में आखिर थर्ड इयर खोलना पड़ा। जीत की खुशी, पर सामने खड़ी बहुत-बहुत बड़ी चिर-प्रतीक्षित खुशी के सामने यह खुशी विला गई–शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि 15 अगस्त, 1947।

इस प्रकार लेखिका मन्नू भंडारी ने अनेक खट्टे-मीठे अनुभवों से भरा अपना आत्मकथ्य प्रस्तुत किया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

शब्दार्थ

सिलसिला = क्रम। **डिक्टेशन** = श्रुतलेख। **ओहदों** = पदों। **अहंवादी** = घमंडी। **भग्नावशेष** = खंडहर (टूटे-फूटे हिस्से)। **यश** = अच्छा काम करने से होनेवाला नाम या ख्याति। **अर्थ** = धन। **विस्फारित** = और अधिक फैलना। **मूँदकर** = बंदकर। **पितृ** = पिता। **गाथा** = कहानी। **ग्रंथि** = गाँठ। **अहसास** = अनुभव। **आसन्न** = निकट आया हुआ। **सहिष्णुता** = सहनशीलता। **दायरा** = क्षेत्र। **हिस्सा** = भाग। **शिद्दत** = तेजी, उग्रता, प्रचंडता, अधिकता। **कल्चर** = संस्कृति। **विच्छिन्न** = तोड़ना। **संकुचित** = सिकुड़ने की क्रिया या भाव। **महाभोज** = मन्नू भंडारी रचित उपन्यास का शीर्षक। **वजूद** = अस्तित्व, मौजूदगी। **सुघड़** = सुंदर, सुडौल। **शगल** = मनोविनोद। **आक्रांत** = कष्टग्रस्त। **आलम** = अवस्था। **दायरा** = सीमा, क्षेत्र। **रगों** = नसों। **बर्दाश्त** = सहन। **वर्जनाएँ** = मनाही। **कोप** = गुस्सा। **खिलाफ** = विरुद्ध। **हकीकत** = वास्तविकता। **मत** = बुद्धि। **लालसा** = इच्छा। **अहसास** = अनुभव, चेतना। **निषिद्ध** = जिस पर रोक लगाई गई हो। **वर्चस्व** = दबदबा, प्रभुत्व। **बिला गई** = गुम हो गई।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्त्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती, थरथराती रहती थी। 'अपनों' के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी। वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते। ***(CBSE 2015)***

1. **पिता के व्यक्तित्व के सकारात्मक पहलुओं को किसने निचोड़ना शुरू कर दिया–**
   (क) माँ ने (ख) लेखिका ने
   (ग) गिरती आर्थिक स्थिति ने (घ) परिवार के सदस्यों ने।
2. **'व्यक्तित्व के सकारात्मक पहलुओं' से लेखिका का क्या आशय है–**
   (क) तन-मन को स्वस्थ रखने वाले सद्गुण
   (ख) घृणा और अविश्वास
   (ग) यज्ञ-हवन और पूजा-पाठ आदि
   (घ) खेल-कूद और मनोरंजन।
3. **लेखिका के पिता शक्की स्वभाव के क्यों हो गए थे–**
   (क) मानसिक स्थिति बिगड़ जाने से
   (ख) आर्थिक स्थिति खराब होने से
   (ग) अपनों के हाथों विश्वासघात की चोट खाकर
   (घ) परिवार के कलह के कारण।
4. **विस्फारित अहं का क्या अर्थ है–**
   (क) स्वयं के अद्वितीय होने का मिथ्या अभियान
   (ख) घमंड में डूबे रहना
   (ग) अहंकार को बढ़ावा देना
   (घ) अहंकार को फैलाना।
5. **पिता का क्रोध सबसे अधिक किसे प्रभावित करता था–**
   (क) घर के बच्चों को (ख) माँ को
   (ग) पड़ोसियों को (घ) नौकरों को।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ख)।

(2) हमने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी इन गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर। हाँ, इतना ज़रूर था कि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं, बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं, इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

1. **लेखिका की गतिविधियों की सीमा कहाँ तक थी–**
   (क) घर के बाहर तक (ख) घर के अंदर तक
   (ग) पूरे शहर तक (घ) इनमें से कोई नहीं।
2. **'घर की दीवारें पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं', का आशय है–**
   (क) घर की दीवारें बहुत बड़ी थीं
   (ख) घर बहुत बड़े-बड़े थे
   (ग) मोहल्ले को भी अपना घर माना जाता था
   (घ) मोहल्ले के बीच दीवारें खिंची थीं।
3. **'पड़ोस कल्चर' क्या है–**
   (क) पड़ोसी से लड़ना-झगड़ना
   (ख) पड़ोसी से कोई मतलब न रखना
   (ग) पड़ोसी से आत्मीयता का भाव रखना
   (घ) पड़ोसी को शिक्षा देना।
4. **महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को 'पड़ोस कल्चर' से किसने अलग कर दिया है–**
   (क) आजकल की शिक्षा ने
   (ख) अपनी ज़िंदगी खुद जीने के दबाव ने
   (ग) पड़ोसियों के व्यवहार ने
   (घ) सरकारी कानून ने।
5. **'पड़ोस कल्चर' से विच्छिन्न होकर हम हो गए हैं–**
   (क) संकुचित (ख) असहाय
   (ग) असुरक्षित (घ) ये सभी।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (घ)।

(3) अपनी ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरंभिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के हैं, जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था गुज़ार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था। एक-दो को छोड़कर उनमें से कोई भी पात्र मेरे परिवार का नहीं है। बस इनको देखते-सुनते, इनके बीच ही मैं बड़ी हुई थी, लेकिन इनकी छाप मेरे मन पर कितनी गहरी थी, इस बात का अहसास तो मुझे कहानियाँ लिखते समय हुआ। इतने वर्षों के अंतराल ने भी उनकी भाव-भंगिमा, भाषा, किसी को भी धुँधला नहीं किया था और बिना किसी विशेष प्रयास के बड़े सहज भाव से वे उतरते चले गए थे। ***(CBSE 2015)***

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

1. 'पड़ोस कल्चर' से कौन विच्छिन्न हो गया है–
(क) गाँव में रहने वाले
(ख) वन में रहने वाले
(ग) महानगरों के फ़्लैट में रहने वाले
(घ) झुग्गी-झोंपड़ियों में रहने वाले।

2. 'पड़ोस-कल्चर' की एक अच्छाई है–
(क) जीवन सुरक्षित और सहज हो जाता है
(ख) जीवन दूभर हो जाता है
(ग) घरेलू खर्च बढ़ जाता है
(घ) एकांत प्राप्त हो जाता है।

3. लेखिका की एक दर्जन कहानियों के पात्र कहाँ के हैं–
(क) गाँव के (ख) उनके परिवार के
(ग) उनके मोहल्ले के (घ) शहर के।

4. मोहल्ले वालों की छाप लेखिका पर कितनी है, इसका अहसास उन्हें कब हुआ–
(क) उत्सव मनाते समय (ख) कहानियाँ लिखते समय
(ग) कविता लिखते समय (घ) मोहल्ला छोड़ते समय।

5. वर्षों के अंतराल ने किसे धुँधला नहीं किया–
(क) पूर्वजों की यादों को
(ख) बचपन की स्मृतियों को
(ग) विद्यालय की घटना को
(घ) पड़ोसी पात्रों की भाषा और भावभंगिमा को।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (घ)।

(4) आए दिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े होते थे और जमकर बहसें होती थीं। बहस करना पिताजी का प्रिय शगल था। चाय-पानी या नाश्ता देने जाती तो पिताजी मुझे भी वहीं बैठने को कहते। वे चाहते थे कि मैं भी वहीं बैठूँ, सुनूँ और जानूँ कि देश में चारों ओर क्या कुछ हो रहा है। देश में हो भी तो कितना कुछ रहा था। सन् 1942 के आंदोलन के बाद से तो सारा देश जैसे खौल रहा था, लेकिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों की नीतियाँ, उनके आपसी विरोध या मतभेदों की तो मुझे दूर-दूर तक कोई समझ नहीं थी। हाँ, क्रांतिकारियों और देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण, उनकी कुर्बानियों से ज़रूर मन आक्रांत रहता था। *(CBSE 2015)*

1. लेखिका के घर में आए दिन क्या होता था–
(क) गीत-संगीत के कार्यक्रम होते थे
(ख) लड़ाई-झगड़ा होता था
(ग) राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े और बहसें होती थीं
(घ) दावतें होती थीं।

2. लेखिका के पिता का प्रिय शगल था–
(क) कविता लिखना (ख) बहस करना
(ग) संगीत सुनना (घ) उपदेश देना।

3. पिता लेखिका को घर में होने वाली बहसों में बैठने के लिए कहते थे, ताकि–
(क) उन्हें बहस करना आ जाए
(ख) उन्हें राजनीति का ज्ञान हो जाए
(ग) वे बोलना सीख जाएँ
(घ) वे देश की घटनाओं को सुनें और समझें।

4. सन् 1942 के आंदोलन के बाद से देश की क्या स्थिति थी–
(क) सारा देश शांत हो गया था
(ख) सारा देश जैसे खौल रहा था
(ग) सारे देश में उत्सव मनाए जा रहे थे
(घ) सारे देश में धार्मिक झगड़े हो रहे थे।

5. लेखिका का मन किस बात से आक्रांत रहता था–
(क) घर में होने वाली बहसों से
(ख) देश में चल रहे आंदोलन से
(ग) राजनैतिक पार्टियों के झगड़ों से
(घ) देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण और बलिदानों से।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (घ)।

(5) पिताजी की आज़ादी की सीमा यहीं तक थी कि उनकी उपस्थिति में घर में आए लोगों के बीच उठूँ-बैठूँ, जानूँ-समझूँ। हाथ उठा-उठाकर नारे लगाती, हड़तालें करवाती, लड़कों के साथ शहर की सड़कें नापती, लड़की को अपनी सारी आधुनिकता के बावजूद बर्दाश्त करना उनके लिए मुश्किल हो रहा था तो किसी की दी हुई आज़ादी के दायरे में चलना मेरे लिए। जब रगों में लहू की जगह लावा बहता हो तो सारे निषेध, सारी वर्जनाएँ और सारा भय कैसे ध्वस्त हो जाता है, यह तभी जाना और अपने क्रोध से सबको थरथरा देने वाले पिताजी से टक्कर लेने का जो सिलसिला तब शुरू हुआ था, राजेंद्र से शादी की, तब तक वह चलता ही रहा।

1. पिता ने लेखिका को कहाँ तक आज़ादी दी थी–
(क) बाहर घूमने-फिरने की
(ख) खुलकर राजनीति करने की
(ग) घर में आए लोगों के बीच बैठने और सुनने-समझने की
(घ) किसी से भी विवाह करने की।

2. लेखिका के पिता को क्या बर्दाश्त नहीं था–
(क) लेखिका का घर में रहना
(ख) लेखिका का खुलकर आंदोलन में भाग लेना
(ग) विद्यालय की राजनीति में भाग लेना
(घ) घर का काम-काज करना।

3. लेखिका के लिए क्या मुश्किल हो रहा था–
(क) चलना-फिरना
(ख) बोलना और बात करना
(ग) किसी की दी हुई आज़ादी के दायरे में रहना
(घ) घर में बैठा रहना।

4. सारे निषेध, सारी वर्जनाएँ और सारा भय कब ध्वस्त हो जाता है–
(क) जब रगों में लहू की जगह लावा बहता हो
(ख) जब कोई किसी की आज़ादी छीनता हो
(ग) जब परिवार पर संकट आता है
(घ) जब कोई किसी का अपमान करता है।

5. लेखिका और उनके पिता का टकराव कब तक चलता रहा–
(क) जीवनभर
(ख) लेखिका के राजेंद्र से शादी करने तक
(ग) देश के स्वतंत्र हो जाने तक
(घ) पिता के जीवित रहने तक।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ख)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. 'एक कहानी यह भी' पाठ के लेखक का नाम है–
(क) स्वयं प्रकाश (ख) प्रेमचंद
(ग) यतींद्रनाथ (घ) मन्नू भंडारी।

2. लेखिका मन्नू भंडारी का जन्म कहाँ हुआ–
(क) गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) (ख) जयपुर (राजस्थान)
(ग) भानपुरा (मध्य प्रदेश) (घ) पटना (बिहार)।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

3. **लेखिका के अजमेर वाले मकान की ऊपरी मंज़िल पर किसका साम्राज्य था–**

(क) लेखिका का (ख) लेखिका के पिता का

(ग) लेखिका की माँ का (घ) लेखिका के भाई का।

4. **लेखिका के पिता के व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं–**

(क) कोमल और संवेदनशील (ख) बेहद क्रोधी और अहंवादी

(ग) दोहरी मानसिकता वाले (घ) ये सभी।

5. **मन्नू भंडारी ने अपनी माँ के बारे में क्या कहा–**

(क) एक आदर्श माँ (ख) व्यक्तित्व विहीन माँ

(ग) एक जागरूक माँ (घ) उदासीन माँ।

6. **लेखिका के पिता ने 'भटियारखाना' किसे कहा है–**

(क) घर को (ख) धर्मशाला को

(ग) रसोईघर को (घ) विद्यालय को।

7. **लेखिका मन्नू भंडारी पर किस व्यक्ति का प्रभाव पड़ा–**

(क) माँ की सरलता और समर्पण का

(ख) पिता का

(ग) अध्यापिका शीला अग्रवाल का

(घ) उपर्युक्त सभी का।

8. **लेखिका के विद्यालय से शिकायती पत्र आया; क्योंकि–**

(क) वे पढ़ाई में कमज़ोर थीं

(ख) वे परीक्षा में नकल करती पकड़ी गई थीं

(ग) उन्होंने अनुशासनहीनता की थी

(घ) उन्होंने स्कूल में हड़ताल करवाई थी।

9. **मन्नू भंडारी की आज़ादी के आंदोलन में क्या भूमिका रही–**

(क) उन्होंने हड़ताल करवाई और भाषण दिए

(ख) जुलूस निकाले और नारे लगवाए

(ग) आंदोलन में खुलकर भाग लिया

(घ) उपर्युक्त सभी।

10. **लेखिका के व्यक्तित्व में हीनता की भावना का कारण था–**

(क) पिता का भेदभावपूर्ण व्यवहार

(ख) शिक्षा का अभाव

(ग) साँवला रंग होना

(घ) दुबला-पतला होना।

11. **मन्नू भंडारी को साहित्य की दुनिया में प्रवेश किसने करवाया–**

(क) पिता ने

(ख) अध्यापिका शीला अग्रवाल ने

(ग) भगवतीचरण वर्मा ने

(घ) उनकी माता ने।

12. **लेखिका के परिवार में लड़की के विवाह के लिए अनिवार्य योग्यता थी–**

(क) उम्र बीस वर्ष और शिक्षा स्नातक

(ख) उम्र सोलह वर्ष और शिक्षा मैट्रिक

(ग) उम्र अठारह वर्ष और शिक्षा इंटरमीडिएट

(घ) उम्र बाईस वर्ष और शिक्षा स्नातकोत्तर।

13. **पिता के सामने लेखिका के भाषण की प्रशंसा किसने की–**

(क) डॉ० अंबालाल ने (ख) डॉ० बेनीप्रसाद ने

(ग) श्रीधर पाठक ने (घ) चमनलाल ने।

14. **लेखिका के पिता को किस चीज़ की भूख थी–**

(क) भोजन की (ख) धन-दौलत की

(ग) यश-प्रतिष्ठा की (घ) शिक्षा की।

15. **पाठ में किस समय का वर्णन है–**

(क) सन् 1946-47 का (ख) सन् 1935-36 का

(ग) सन् 1950-51 का (घ) सन् 1960-61 का।

16. **'पड़ोस कल्चर' से कौन वंचित है–**

(क) गाँव में रहने वाले

(ख) शहर में रहने वाले

(ग) महानगरों के फ़्लैट में रहने वाले

(घ) कस्बे में रहने वाले।

17. **शीला अग्रवाल को कॉलिज वालों ने नोटिस क्यों दिया–**

(क) लड़कियों को भड़काने के अपराध में

(ख) अच्छा परिणाम न देने के कारण

(ग) अनुपस्थित रहने के कारण

(घ) अच्छा शिक्षण न करने के कारण।

18. **लेखिका ने शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि किसे कहा है–**

(क) कॉलिज वालों का झुक जाना

(ख) राजेंद्र के साथ विवाह

(ग) कहानियों का प्रकाशित होना

(घ) 15 अगस्त, 1947 (स्वतंत्रता प्राप्ति)।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (घ) **5.** (ख) **6.** (ग) **7.** (घ) **8.** (घ) **9.** (घ) **10.** (क) **11.** (ख) **12.** (ख) **13.** (क) **14.** (ग) **15.** (क) **16.** (ग) **17.** (क) **18.** (घ)।

भाग-2

(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : 'एक कहानी यह भी' पाठ की लेखिका के अपने पिता के साथ वैचारिक टकराहट के कारणों पर प्रकाश डालिए। *(CBSE 2019)*

***अथवा* अपने पिता से मन्नू भंडारी के वैचारिक मतभेद को अपने शब्दों में लिखिए।** *(CBSE 2019)*

उत्तर: लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट के अनेक कारण थे। लेखिका के पिता को अपनी बेटी को लेकर समाज में होने वाली थू-थू और मान-सम्मान की बड़ी चिंता थी। वे चाहते थे कि बेटी समाज और देश के प्रति जागरूक बने, लेकिन घर के दायरे में ही रहे। वे चाहते थे कि बेटी राजनीति का ज्ञान प्राप्त करे, लेकिन खुलकर राजनीति न करे। लेखिका को पिता के द्वारा निश्चित की गई सीमाएँ और निषेध पसंद नहीं थे; इसलिए दोनों के बीच वैचारिक टकराहट होती थी।

प्रश्न 2 : इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन में मन्नू भंडारी की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: पाठ में सन् 1945-46 ई० के समय का वर्णन किया गया है। उस समय देश की आज़ादी का आंदोलन चरम पर था। हर नागरिक किसी-न-किसी रूप में इस आंदोलन में योगदान करना चाहता था। ऐसे में मन्नू भंडारी ने इस आंदोलन में खुलकर भाग लिया। उन्होंने हड़ताल करवाई, जुलूस निकाले, भाषण दिए, नारे लगवाए और जोशीले लेख भी लिखे। उनके इशारे पर सारा कॉलिज उनके साथ चल देता था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 3 : 'एक कहानी यह भी' पाठ की लेखिका पर किन-किन व्यक्तियों का कैसा प्रभाव पड़ा?

उत्तर : लेखिका पर निम्नलिखित व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा–

(i) लेखिका अपनी माँ की सरलता तथा समर्पण से प्रभावित हुई।

(ii) पिता से उसे राजनीति की प्रेरणा मिली, लेकिन उनके शक्की स्वभाव के कारण लेखिका के व्यक्तित्व में हीनता की भावना का समावेश हो गया।

(iii) अध्यापिका शीला अग्रवाल की प्रेरणा से लेखिका ने रचनात्मक लेखन और जीवन में संघर्ष करना सीखा।

(iv) लेखिका पर तत्कालीन लेखकों और साहित्यकारों का भी प्रभाव पड़ा।

प्रश्न 4 : 'एक कहानी यह भी' में लेखिका के पिता ने रसोईघर को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?

उत्तर : भटियारखाने में रुकने के लिए आने वाले यात्रियों के ठहरने और खाने-पीने की व्यवस्था होती है। रसोईघर में भी यही कुछ होता है। रसोईघर में काम करने वाली स्त्री का जीवन केवल परिवार के लोगों की खाने-पीने की व्यवस्था करने में ही समाप्त हो जाता है। उसकी रचनात्मक क्षमता और प्रतिभा का वहाँ कोई उपयोग नहीं हो पाता है। इसीलिए लेखिका के पिता ने रसोईघर को 'भटियारखाना' कहकर संबोधित किया है।

प्रश्न 5 : महानगरों की 'फ्लैट-कल्चर' और लेखिका मन्नू भंडारी के 'पड़ोस कल्चर' में क्या अंतर दिखाई देता है? विचार करते हुए लिखिए। ***(CBSE SQP 2023-24)***

उत्तर : महानगरों की 'फ्लैट कल्चर' में अकेलापन, परस्पर अलगाव, असुरक्षा और कृत्रिम जीवन है, जबकि मन्नू भंडारी के 'पड़ोस कल्चर' में पारस्परिक सद्भाव, आत्मीयता, सुरक्षा और सहज जीवन है।

प्रश्न 6 : लेखिका मन्नू भंडारी के भाषण की प्रशंसा किस व्यक्ति ने उनके पिताजी से की? उसका उनके पिताजी पर कैसा प्रभाव पड़ा?

उत्तर : लेखिका मन्नू भंडारी के पिताजी से उनके भाषण की प्रशंसा उनके पिता के बेहद अंतरंग और अभिन्न मित्र एवं अजमेर के सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानित डॉ० अंबालाल जी ने की। इस प्रकार अपनी बेटी की प्रशंसा सुनकर उनके पिताजी का क्रोध जाता रहा और उनके चेहरे का संतोष धीरे-धीरे गर्व में बदल गया।

प्रश्न 7 : मन्नू भंडारी की माँ त्याग और धैर्य की पराकाष्ठा थीं– फिर भी लेखिका के लिए आदर्श नहीं बन पाईं। क्यों? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : मन्नू भंडारी की माँ त्याग और धैर्य की पराकाष्ठा थीं, फिर भी वह लेखिका के लिए आदर्श न बन सकीं; क्योंकि लेखिका की माँ अनपढ़ और असहाय थीं। वे अपने पति और बच्चों की अनुचित बातों का भी विरोध नहीं करती थीं। उनकी अपनी कोई इच्छा नहीं थी। ऐसा मौन त्याग नारी के कमज़ोर और प्रभावहीन व्यक्तित्व का परिचायक है। इसीलिए ऐसा व्यक्तित्व खुली सोच वाली लेखिका का आदर्श नहीं बन सकता था।

प्रश्न 8 : मन्नू भंडारी के लेखकीय व्यक्तित्व निर्माण में शीला अग्रवाल की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : शीला अग्रवाल लेखिका की हिंदी अध्यापिका थीं। लेखिका के जीवन को तराशने में उनकी बहुत बड़ी भूमिका थी। उन्होंने लेखिका की पुस्तकों में रुचि उत्पन्न की। वे स्वयं उन्हें चुनकर पुस्तकें देती थीं और उन पर बहस भी करती थीं। इस प्रकार उन्होंने लेखिका को लेखन और साहित्य को समझने की दृष्टि प्रदान की। शीला जी ने ही उनमें देशभक्ति की भावना जगाई और राजनैतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने की प्रेरणा दी।

प्रश्न 9 : लेखिका के पिता लेखिका को घर में होने वाली बहसों में बैठने के लिए क्यों कहते थे? ***(CBSE 2015)***

उत्तर : लेखिका के घर में आए दिन राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े होते रहते थे। उनमें विभिन्न पार्टियों की नीतियों और स्वतंत्रता आंदोलन को लेकर बहसें होती रहती थीं। जब लेखिका चाय-पानी या नाश्ता देने जाती तो पिता उसे वहीं बैठकर राजनैतिक चर्चाएँ सुनने को कहते, ताकि उसे राजनीति और देश में होने वाली गतिविधियों की सही जानकारी हो सके।

प्रश्न 10 : 'पड़ोस कल्चर' क्या है? महानगरों में रहने वाले लोग प्रायः इससे क्यों वंचित रह जाते हैं? ***(CBSE 2015)***

अथवा **'एक कहानी यह भी' के संदर्भ में लिखिए कि वर्तमान पड़ोस-कल्चर में किन-किन बातों का अभाव दृष्टिगोचर होता है?** ***(CBSE 2023)***

उत्तर : पड़ोसियों से आत्मीयता रखना, उनके सुख-दुख में शामिल होना 'पड़ोस-कल्चर' कहलाता है। महानगरों में रहने वाले लोग पड़ोस-कल्चर से इसलिए वंचित रह जाते हैं; क्योंकि उनका जीवन अत्यधिक व्यस्त है। उनके पास न स्वयं के लिए समय होता है और न परिवार के लिए। ऐसे में आस-पड़ोस के लिए समय का तो प्रश्न ही नहीं उठता। जीवन की इस दौड़ में वे सबसे कट जाते हैं। यही कारण है कि विपत्ति आने पर वे स्वयं को अकेला, असहाय और असुरक्षित पाते हैं। आज पड़ोस कल्चर में आत्मीयता और सहानुभूति का अभाव है।

प्रश्न 11 : मन्नू भंडारी की ऐसी कौन-सी खुशी थी, जो 15 अगस्त, 1947 की खुशी में समाकर रह गई? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : मई, 1947 में कॉलिज वालों ने अध्यापिका शीला अग्रवाल को लड़कियों को भड़काने और कॉलिज का अनुशासन बिगाड़ने के आरोप में नोटिस थमा दिया, इस बात को लेकर हुड़दंग न मचे, इसलिए थर्ड इयर की कक्षाएँ बंद करके लेखिका सहित दो-तीन छात्राओं का स्कूल में प्रवेश निषिद्ध कर दिया। लेखिका ने विद्यार्थियों के साथ मिलकर कॉलिज के बाहर इसके खिलाफ़ आंदोलन किया। इसके सामने कॉलिज वालों को झुककर अगस्त में कॉलिज खोलना पड़ा। लेखिका के लिए यह बहुत बड़ी खुशी थी, लेकिन 15 अगस्त, 1947 को जो खुशी देशवासियों को मिली, वह इतनी बड़ी थी कि सभी खुशियाँ उसमें समाकर रह गईं। वह थी स्वतंत्रता प्राप्ति की महती खुशी।

प्रश्न 12 : मन्नू भंडारी के पिता की कौन-सी विशेषताएँ अनुकरणीय हैं? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : मन्नू भंडारी के पिता समाज सुधार के कार्यों से जुड़े थे। उन्हें पढ़ने-पढ़ाने का बहुत शौक था, इसलिए उन्होंने न केवल आठ-दस छात्रों को अपने घर पर रखकर पढ़ाया, बल्कि उन्होंने स्वयं अंग्रेज़ी-हिंदी विषयवार शब्दकोश भी तैयार किया था। लड़कों के साथ-साथ वे लड़कियों को पढ़ाने पर भी ज़ोर देते थे। उनमें देशप्रेम की भावना भी कूट-कूटकर भरी थी। उनकी यही सारी विशेषताएँ अनुकरणीय हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 13 : मन्नू भंडारी ने अपनी माँ के लिए क्या कहा? *(CBSE 2017)*

उत्तर : लेखिका अपनी माँ को एक प्रताड़ित गृहिणी मानती थी। इसलिए उन्होंने अपनी माँ को व्यक्तित्वविहीन और निरीह कहा है। उनकी माँ पति के हर उचित-अनुचित आदेश को मानना अपना धर्म समझती थीं। विरोध या स्वेच्छा से उनका दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं था। इसका कारण शायद उनका अशिक्षित होना था। वे घर के सभी सदस्यों की सभी इच्छाएँ पूरी करती थीं, इसलिए सभी उनसे सहानुभूति रखते थे। उन्होंने जीवन में सबको दिया ही, कभी किसी से लिया नहीं।

प्रश्न 14 : अंतिम दिनों में मन्नू भंडारी के पिता का स्वभाव शक्की हो गया था। लेखिका ने इसके क्या कारण दिए? *(CBSE 2017)*

उत्तर : लेखिका के अनुसार अंतिम दिनों में उनके पिता का स्वभाव शक्की हो गया था। इसका कारण यह था कि उनके अपनों ने उन्हें विश्वासघात की गहरी चोटें दी थीं। उनकी आर्थिक स्थिति बहुत गिर गई थी। इससे उनके व्यक्तित्व के सभी सकारात्मक पहलू और सद्भावनाएँ नष्ट हो गई थीं। अहंकार ने उनके अंदर कुंठा को जन्म दे दिया था, इसीलिए वे अपने बच्चों पर भी शक करने लगे थे।

प्रश्न 15 : 'एक कहानी यह भी' पाठ क्या संदेश देता है?

***अथवा* 'एक कहानी यह भी' पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है?**

उत्तर : 'एक कहानी यह भी' पाठ हमें यह संदेश देता है कि हमें व्यक्ति के बाहरी रंग-रूप, सुंदरता आदि के आधार पर उसका विश्लेषण नहीं करना चाहिए। छोटे बच्चों की तुलना उनके सामने दूसरे बच्चों या उनके भाई-बहनों से नहीं करनी चाहिए। इससे कमज़ोर बच्चों में हीनभावना आ जाती है। इसके साथ ही हमें लड़कियों को लड़कों के समान आगे बढ़ने के सभी अवसर देने चाहिए, जिससे वे भी समाज में अपनी पहचान बना सकें।

प्रश्न 16 : वह कौन-सी घटना थी, जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हुआ और न कानों पर?

उत्तर : लेखिका के कॉलिज से उनके पिता के नाम एक शिकायती पत्र आया था, जिसमें उन्हें कॉलिज बुलाया गया था। पिता को लगा कि लेखिका ने ज़रूर कोई अपमानजनक कार्य किया होगा। वे क्रोध से बड़बड़ाते हुए कॉलिज गए।

कॉलिज जाने पर जब पिताजी को प्रिंसिपल ने बताया कि मन्नू सभी लड़कियों की चहेती नेत्री है। सारा कॉलिज उसी के इशारों पर चलता है। प्रिंसिपल को कॉलिज चलाना मुश्किल हो रहा है; क्योंकि लड़कियाँ उसी की बात मानती और उसी के संकेतों पर चलती भी हैं। यह सुनकर पिता गद्‌गद हो उठे, उनका सीना गर्व से फूल गया। उन्होंने प्रिंसिपल को उत्तर दिया– यह तो पूरे देश की पुकार है इस पर कोई कैसे रोक लगा सकता है भला? लेखिका को लगा था कि पिताजी उसे डाँटेंगे, धमकाएँगे तथा घर से बाहर निकलना बंद कर देंगे, लेकिन पिता ने घर आकर उनकी प्रशंसा की। अपने पिता के मुख से ऐसी प्रशंसा की उन्हें आशा न थी। यह प्रशंसा सुनकर उन्हें न अपनी आँखों पर विश्वास हुआ और न कानों पर।

प्रश्न 17 : 'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर लेखिका के पिता के सकारात्मक और नकारात्मक गुणों का उल्लेख कीजिए। *(CBSE 2020)*

उत्तर : लेखिका ने अपने पिता के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों गुणों का उल्लेख किया है। समाज सुधार के कार्यों में भाग लेना, पढ़ने-पढ़ाने का शौक, देश में होने वाली घटनाओं के विषय में संवेदनशीलता और लड़कियों की शिक्षा का समर्थक होना उनके सकारात्मक गुण थे।

यश-प्रतिष्ठा की भूख, अहंवादिता, शक्की स्वभाव, क्रोध, दोहरी मानसिकता तथा लड़कियों को घर के दायरे में बाँधकर रखने की प्रवृत्ति, उनके नकारात्मक गुण थे।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

आए दिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े होते थे और जमकर बहसें होती थीं। बहस करना पिताजी का प्रिय शगल था। चाय-पानी या नाश्ता देने जाती तो पिताजी मुझे भी वहीं बैठने को कहते। वे चाहते थे कि मैं भी वहीं बैठूँ, सुनूँ और जानूँ कि देश में चारों ओर क्या कुछ हो रहा है। देश में हो भी तो कितना कुछ रहा था। सन् 1942 के आंदोलन के बाद से तो सारा देश जैसे खौल रहा था, लेकिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों की नीतियाँ, उनके आपसी विरोध या मतभेदों की तो मुझे दूर-दूर तक कोई समझ नहीं थी। हाँ, क्रांतिकारियों और देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण, उनकी कुर्बानियों से ज़रूर मन आक्रांत रहता था।

1. लेखिका के घर में आए दिन क्या होता था–

(क) गीत-संगीत के कार्यक्रम होते थे
(ख) लड़ाई-झगड़ा होता था
(ग) राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े और बहसें होती थीं
(घ) दावतें होती थीं।

2. लेखिका के पिता का प्रिय शगल था–

(क) कविता लिखना (ख) बहस करना
(ग) संगीत सुनना (घ) उपदेश देना।

3. पिता लेखिका को घर में होने वाली बहसों में बैठने के लिए कहते थे, ताकि–

(क) उन्हें बहस करना आ जाए
(ख) उन्हें राजनीति का ज्ञान हो जाए
(ग) वे बोलना सीख जाएँ
(घ) वे देश की घटनाओं को सुनें और समझें।

4. सन् 1942 के आंदोलन के बाद से देश की क्या स्थिति थी–

(क) सारा देश शांत हो गया था
(ख) सारा देश जैसे खौल रहा था
(ग) सारे देश में उत्सव मनाए जा रहे थे
(घ) सारे देश में धार्मिक झगड़े हो रहे थे।

5. लेखिका का मन किस बात से आक्रांत रहता था–

(क) घर में होने वाली बहसों से
(ख) देश में चल रहे आंदोलन से
(ग) राजनैतिक पार्टियों के झगड़ों से
(घ) देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण और बलिदानों से।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. **लेखिका मन्नू भंडारी का जन्म कहाँ हुआ–**
   (क) गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)
   (ख) जयपुर (राजस्थान)
   (ग) भानपुरा (मध्य प्रदेश)
   (घ) पटना (बिहार)।
7. **लेखिका के व्यक्तित्व में हीनता की भावना का कारण था–**
   (क) पिता का भेदभावपूर्ण व्यवहार
   (ख) शिक्षा का अभाव
   (ग) साँवला रंग होना
   (घ) दुबला-पतला होना।
8. **'पड़ोस कल्चर' से कौन वंचित है–**
   (क) गाँव में रहने वाले
   (ख) शहर में रहने वाले
   (ग) महानगरों के फ़्लैट में रहने वाले
   (घ) कस्बे में रहने वाले।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. **इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन में मन्नू भंडारी की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।**
10. **मन्नू भंडारी के लेखकीय व्यक्तित्व निर्माण में शीला अग्रवाल की भूमिका स्पष्ट कीजिए।**
11. **अंतिम दिनों में मन्नू भंडारी के पिता का स्वभाव शक्की हो गया था। लेखिका ने इसके क्या कारण दिए?** *(CBSE 2017)*
12. **वह कौन-सी घटना थी, जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हुआ और न कानों पर?**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in